Piare Lal Gupta

Gupta Building,
Naya Gaon,

Lucknow 21st December, 1958.

26 DEC 1958

Dr. K.S. Krishnan,
F.R.S.
National Professor of Physics, &
Director National Physics Laboratory,
New Delhi.

Revered Sir,

I enclose my book "P-ARV PRADARSHANIKA" dealing in the inner significance of the festivals observed in India & abroad by the followers of Hindu Religion. The Books so far produced & available on the subject deal with stunt stories which in Epic age and still now are read without applying the mind to know what they actually convey. In my book I have laid stress on the theory of one-ness and have established by multiple processes to show how the stories play a part in bringing the world together & why should they be universally accepted.

The origination of Deonagri alphabets, changes in the intermediary period and finally the present shape. The chapter dealing with this, will appear peculiar but convincing. All through the Book you will find objects of vital interest to you as you have a Scientific outlook. The beauty of the Book is that it has used only the cultural back ground of the festivals to analyse the present day problems of the world.

The Book has met public appreciation. A few opinions along with the summary on the Book (enclosed) will show how far I have been successful in dealing with the subject.

Yours faithful-ly,
Piare Lal Gupta
(Piare Lal Gupta)

Encl: Parv Pradarshanika.
Summary & Opinions.

N.B. Kindly oblige me with your opinion on the Book.

Piare Lal Gupta

पर्व प्रदर्शनिका

[लब्ध-प्रतिष्ठ व्यक्तियों और पत्र सम्पादकों की सम्मतियाँ]

जगदम्बा

सारांश

मेरे द्वारा प्रकाशित पुस्तकों का आधार केवल मेरे एकत्व तथा असम्प्रदायिक भावों और स्वयं अनुभव द्वारा आध्यात्मिक विषयों पर निर्भर है।

यदि इन पुस्तकों का अध्ययन और मनन एकाग्र चित्त से किया जाय तो मैं आशा करता हूँ कि प्राणीमात्र को मैं और मेरा, तू और तेरा, यह और वह तथा अपनी आत्मा का ज्ञान तथा दर्शन होने लगेगा और एकत्वता तथा असम्प्रदायिकता में रमण करते हुए अपने आप को सर्व में और सर्व को अपने आप में देखने लगेगा।

इसके अतिरिक्त संस्कृति के ५२ देवाक्षरों की उत्पत्ति, उनके आकार, रूपों अथवा नामों का पुनः प्रदर्शन हुआ है, जिनका स्थान-स्थान पर इन पुस्तकों में चित्र सहित दर्शाया गया है।

सन्तवाणियों, वेदों तथा गीता के बहुत से श्लोकों के प्रचलित अर्थों से, मेरे अनुभव द्वारा किये हुए अर्थों में भी पृथकता पाई जाएगी।

प्रकाशित पुस्तकें

१. पर्व-प्रदर्शनिका

२. गुप्तार्थ प्रकाशिका (प्रथम भाग)

—प्यारेलाल गुप्ता

श्री राज्यपाल

सत्यमेव जयते

राज्यपाल शिविर
उत्तर प्रदेश

Lucknow,
July 17, 1958.

Dear Shri Piare Lal Gupta,

I write to thank you for sending me a second copy of your book 'Parva-Pradarshanika', as the copy you left with me was misplaced.

Not knowing Hindi myself, I had the book read out to me. I am glad to see that by intense study, research and introspection, you have tried to explain the inner meaning and significance of the various rituals and festivals which the Hindu Religion prescribes for its followers. Your book - though highly technical and metaphysical - should help people in realising the background of the various religious observances which they periodically undertake. As you yourself say, the book is meant only for those with special aptitude and training, I am sure it will be very interesting and instructive to such people.

Once again, thank you for sending me a copy of your book.

Yours sincerely,
Sd.
(V. V. Giri)

Shri Piare Lal Gupta,
Gupta Building,
Naya Gaon,
Lucknow.

SWASTI SHRI 108 VIDYALANKAR

Acharya Shri Desh Bhushan Muni Maharaj Sangha

स्वस्ति श्री १०८ विद्यालंकार

आचार्यरत्न श्री देशभूषण मुनि महाराज-संघ

कलकत्ता

दिनांक ३१-७-१९५८

पर्व प्रदर्शनिका—पुस्तक आद्योपान्त पढ़ी। इसमें हिन्दू जाति के उन प्रचलित पर्वों पर ऊहापोहपूर्ण-नये ढंग से विचार विमर्श किया गया है जो लेखक की अपनी प्रगतिशील प्रतिभा का परिचायक है। पर्वों की यथार्थता को समझाने में लेखक की कुशलता सर्वथा सराहनीय है। पुस्तक बहुत ही उपयोगी है जो कि पर्वों की आन्तरिक असलियत को प्रकट करने में अद्वितीय है। इससे जनता अधिक से अधिक लाभान्वित हो, ऐसा हमारा शुभाशीर्वाद है।

पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर
बेलगछिया उपवन
कलकत्ता-३७

पर्व-प्रदर्शनिका

उक्त पुस्तक के कतिपय पृष्ठ मैंने अत्यन्त जागरूकता-पूर्वक पढ़े। थोड़ी ही देर में मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि यह पुस्तक, 'अपरा विद्या' के अभिव्यञ्जक कुछ ग्रन्थों का सार ही है, प्रत्युत यह आत्मानुभव या आत्मालोड़न का मिश्रण नवनीत है। ऐसे ग्रन्थ शिक्षा समलंकृत व्यक्तियों की लेखनी द्वारा नहीं, सन्तों की निर्मल चिर-साधना द्वारा ही प्रकाश में आते हैं। इस भौतिक युग में ऐसे मौलिक निदिध्यासन–विशिष्ट ग्रन्थ का प्रकाशन दुर्लभ है। गीता ने ठीक ही कहा है :—

॥ त्रैगुण्य विषयावेदा, निस्त्रैगुण्योभवार्जुन ॥

अतः बिना "निस्त्रैगुण्य" दृष्टि के ऐसा शाश्वत ग्रन्थ का रहस्य, हृदयंगम ही कैसे किया जा सकता है ?

॥ मार्मिकः कोमरन्दणाम्रन्तरेण मधुव्रतम् ॥

"दैव" स्वाध्यायी
राजेन्द्र नगर
गवर्नमेन्ट बिल्डिंग, लखनऊ

ता० १५-७-५८

अमृत पत्रिका, इलाहाबाद

रविवार, ६ जुलाई १९५८

पर्व प्रदर्शनिका

(रचयिता श्री प्यारेलाल गुप्त)

मुख्य विक्रेता श्री रामनिवास कौशल

द्वारा कौशला जनरल ट्रेडिंग कम्पनी

अमीनाबाद पार्क, लखनऊ

मूल्य १५) रुपये

प्रस्तुत ग्रन्थ की भूमिका में डाक्टर सीताराम लिखते हैं, "यह लेखमाला लेखक के परिश्रम एवं सुरुचि-युक्त चयन की परिचायिका है। लेखक ने वैज्ञानिक प्रणाली से, प्रचलित हिन्दू त्योहारों, पर्वों एवं पूजन आदि प्रथाओं के सम्बन्ध में प्रकाश डालने का सफल प्रयास किया है। आशा है, आर्य संस्कृति के स्वाध्यायी इसे पढ़ने का कष्ट कर अपने अर्जित ज्ञान में उपयुक्त एवं हितकर परिवर्धन करेंगे, जो आज के युग में प्राणिमात्र के हेतु बड़े महत्व का है। लेखक का गहन अध्ययन और सुन्दर दृष्टिकोण का स्पष्टीकरण चित्रों एवं शब्द-विग्रह द्वारा सराहनीय है।"

प्रस्तुत ग्रन्थ में संग्रहीत लेखों के सम्बन्ध में डा० सीताराम ने यहाँ जो बात कही वह सर्वथा उचित है। ग्रन्थ का लेखन अधिकारी विद्वान ने रोचक ढंग से किया है। इसमें कहानी कला का भी परिचय यत्र-तत्र मिलता है। पुस्तक में लेख संग्रह

इस प्रकार हुआ है—सत्यनारायण की कथा; दुर्गा और उसका दर्शन; नवरात्रि में देवी पूजन; श्री दुर्गा के सम्मुख बलि; श्रीकृष्ण जन्माष्टमी; अनन्त चतुर्दशी; रक्षा बन्धन; दीप मालिका; भैया दूज; होलका दहन; शिवरात्रि महोत्सव; चन्द्र ग्रहण; विश्वकर्मा पूजा; अश्वत्थादि पूजन।

लेखक ने इस ग्रन्थ तथा उसकी विषय-वस्तु के सम्बन्ध में प्रकाश डालते हुये कहा है, "प्रस्तुत पुस्तक में यद्यपि हिन्दू व्रतों और त्योहारों का ही वर्णन हैं, परन्तु इस 'हिन्दू' शब्द को लेकर उस पर साम्प्रदायिक भाव का छाप न लगाया जाय, क्योंकि हम हिन्दू शब्द मानवगण के लिये ही प्रयोग करते हैं। हमारे मत से हिन्दू शब्द साम्प्रदायिक नहीं, अपितु वह सार्वजनिक है। वह मानवगण का वाचक है, जैसा कि प्रस्तुत पुस्तक के अन्यान्य निबन्धों में किये गये अर्थ से स्पष्ट होगा। इसी प्रकार हिन्दू देवी देवता-किसी जनगण विशेष के देवी-देवता नहीं, मानवगण के देवी-देवता हैं। हिन्दू त्योहार भी मानवगण के त्योहार हैं। भले ही वह अन्यान्य देशों में नाना एवं विभिन्न रूपों से मनाये जाते हैं।"

व्रतों, त्योहारों अथवा देवी-देवताओं के सम्बन्ध में यद्यपि सदैव विवाद रहा है, अब भी है और आगे भी रहेगा, फिर भी अधिक लोग उन्हें मानते हैं, उन पर विश्वास करते हैं। विद्वान लेखक ने उनकी व्याख्या अपने ढंग से की है। लेखक की व्याख्या से पूर्णतया सहमत होना सम्भव नहीं, परन्तु उनके अध्यवसाय एवं परिश्रम की दाद सभी देंगे। पुस्तक का स्वागत ज्ञानपिपासु क्षेत्रों में होगा।

—सरस्वती कुमार

THE LEADER, ALLAHABAD.

Sunday, August 24, 1958.

"Parv Pradarshanika" (Hindi) by Piare Lal Gupta, published by Ram Niwas Kaushal, Kaushla General Trading Co., Aminabad Park, Lucknow.

This book is a unique attempt to understand the significance and necessity of the festivals commonly celebrated by Hindus all over the country. To the author they are inseparable part of man, God and the universe. He has made an earnest endeavour to establish the oneness of man with God, and concludes from this phenomenon the universal brotherhood of man. In the oneness he visualises, there is no diversity, no hostility which divides man from man.

His philological study of some common words used in understanding the philosophical thought is interesting. His approach to philosophical problems is not ambiguous. The book might be useful to those trying to understand the mundane affairs in philosophical background.

Obtainable from :—

RAM NIWAS KAUSHAL

C/o Kaushla General Trading Co.

Aminabad Park, LUCKNOW.

सर्वभूतहितरताः

स्वामी शुकदेवानन्द

—: संस्थापक :—

फोन नं० २३

परमार्थ निकेतन, स्वर्गाश्रम

ऋषिकेश (हिमालय)

फोन नं० १०१

मुमुक्षु आश्रम, शाहजहाँपुर

परमार्थ निकेतन, ऋषिकेश

दिनांक दीपावली, शुभ सम्वत् २०१५

परमादरणीय श्री गुप्ता जी,

सादर हरि-स्मरण !

आपने अपनी अमूल्य पुस्तक 'पर्व प्रदर्शनिका' शाहजहाँपुर के पते से भेजी थी सो यहाँ आकर मुझे अभी मिली है। उक्त पुस्तक के कतिपय पृष्ठ ही अभी मैं पढ़ पाया हूँ, इसी से ज्ञात होता है कि आपने बहुत अध्ययन और परिश्रम करके इसे लिखा है। आपका प्रयास सराहनीय है। आपने वैज्ञानिक ढंग से भी पर्वों के सम्बन्ध में प्रकाश डाला है, यह बहुत ही अच्छा किया है। भगवान से प्रार्थना है कि जनता इस पुस्तक से अधिक से अधिक लाभान्वित हो।

आपका

शुकदेवानन्द

Wier (Via Bayana)
Distt. Bharatpur
28-10-58.

प्रिय भाई,

आपकी पुस्तक और कृपा पत्र ! धन्यवाद। मेरा नाम रंगाराघव नहीं, रांगेयराघव है। आपकी पुस्तक पढ़ी। आपका विवेक विलास कौतूहल पूर्ण और मनोरंजक है। मेरी बधाई स्वीकार करें।

सस्नेह

रांगेयराघव

उप मंत्री

उत्तर प्रदेश

विधान भवन
लखनऊ, नवम्बर ४, ५८

मैंने श्री प्यारेलाल गुप्त द्वारा लिखित पर्व प्रदर्शनिका पुस्तक को ध्यानपूर्वक पढ़ा। अपने ढंग की यह अकेली पुस्तक है। इसमें हिन्दू पर्व त्योहारों का वैज्ञानिक ढंग से विवेचन किया गया है। मैं लेखक को ऐसी सुन्दर पुस्तक लिखने के लिए बधाई देता हूँ।

(रऊफ जाफरी)

शिवानन्द नगर,
११-११-५८

The Divine Life Society,
P.O. Shivanandnagar, Rishikesh,
U. P. India.

प्रिय अमर आत्मन्,

ओ३म् नमो नारायणाय !

आप का कृपापत्र मिला। धन्यवाद ! इस पुस्तक में आपने हिन्दू जनता की भलाई के लिए पर्वों का धार्मिक विवरण बहुत ही मनोरंजक ढंग से दिया है। यह स्तुत्य प्रयास है। इससे बहुतों को पर्वों के प्रति नई दृष्टि प्राप्त होगी। यह पुस्तक अपने ढंग की निराली है। आपके अनुभव के द्वारा निश्चय ही सभी लाभान्वित होंगे।

आपको ईश्वर की अनुपम कृपा प्राप्त हो।

हरि ओ३म् तत्सत् !

आपका आत्मस्वरूप
शिवानन्द

नव भारत टाइम्स, दिल्ली

रविवार, ९ नवम्बर १९५८

पर्व-प्रदर्शनिका

लेखक---प्यारेलाल गुप्ता,
प्रकाशक—प्यारेलाल गुप्ता,
गुप्ता बिल्डिग, नया गाँव, लखनऊ।
पृष्ठ संख्या ११०,
मूल्य सजिल्द ७॥), अजिल्द ६)।

विद्वान लेखक ने प्रस्तुत पुस्तक में सत्यनारायण की कथा, दुर्गा और उसका दर्शन, नवरात्रि में देवी-पूजन, श्री दुर्गा के सम्मुख बलि, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, दीपमालिका, भैयादूज, होलिकादहन, शिवरात्रि महोत्सव, चन्द्रग्रहण, विश्वकर्मा पूजन और अश्वत्थादि पूजन आदि पर विस्तारपूर्वक विवेचना की है। पुस्तक में व्रत पूजनादि उनकी महत्ता पौराणिक दृष्टियों से ही नही सुलझाया है अपितु लेखक के अपने निजी अनुभवों तथा यौगिक तन्त्रों की दृष्टि से भी भलीभाँति विवेचना की गई है। जैसे—

'दीपमालिका' दीप=(द+ई+प)=द=दबी हुई या दमित+ई=इच्छा शक्ति + प = प्रकाश अर्थात् दबी हुई इच्छा शक्ति का प्रकाश अर्थात् साकार होना अर्थात् रूप। मालिका=(म + अ + ल + इ + क + अ) म=अप्रकाश, अप्रकटित+आ=आधार या शक्ति या शक्तिमान+ल=रूप, पृथ्वी, प्राण+इ=इच्चा+क=शब्द+आ=आधार, अव्यक्त अर्थात् अप्रकटित शक्तिमान् की इच्छा जो शब्द रूप से नाम रूप में, रूप का आधार पाकर प्रकट हुई अर्थात् परम ज्योति, परम शक्ति।

इसी प्रकार तांत्रित दृष्टि से लेखक महोदय ने प्रस्तुत पुस्तक में जो प्रकाश डाला है सचमुच लेखक का यह अथक परीश्रम प्रशंसनीय है, पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है। पर्वों की वास्तविकता को प्रकट करने में अद्वितीय है। पुस्तक की छपाई एवं गेट अप भी अच्छा है।

आशा है आलोच्य पुस्तक विद्वानों के लिए ही नहीं अपितु समस्त गृहस्थ के लिए लाभदायक सिद्ध होंगी।

भारत, इलाहाबाद
रविवार, १२ अक्टूबर १९५८

पर्व-प्रदर्शनिका
लेखक—श्री प्यारे लाल गुप्त,
प्रकाशक—श्री प्यारे लाल गुप्त
गुप्ता बिल्डिंग, नया गाँव,
लखनऊ।

मुद्रक—श्री निवास कौशल,
श्री निवास प्रिंटिंग प्रेस,
गौतम बुद्ध मार्ग लखनऊ।
मूल्य १५), पृष्ठ संख्या ११०

हमारे सामाजिक जीवन में पर्वों का महत्वपूर्ण स्थान है। आज के वैज्ञानिक युग में हमारे दृष्टिकोणों में भले ही कुछ परिवर्तन आ जाये, लेकिन जहाँ तक पर्वों, व्रतों एवं अन्य धार्मिक मान्यताओं का प्रश्न है, ये उसी रूप में कायम है और भविष्य में भी कायम रहेंगे। इसका मूल कारण शताब्दियों चले आ रहे हैं। हमारे सामाजिक विश्वास एवं भावनाएं हैं जिन्होंने हमारे हृदय के अन्दर एक विशिष्ट स्थान बना लिया है। प्रस्तुत पुस्तक में जैसा कि इसके शीर्षक से विदित है: नवरात्र, चन्द्रग्रहण, कृष्णजन्माष्टमी, अनन्त चतुर्दशी, शिवरात्रि आदि जैसे विभिन्न पर्वों की विशेषता का जिक्र किया गया है। लेखक ने इन पर्वों के बारे में अपनी मौलिक व्याख्या प्रस्तुत की है जो मनन करने योग्य है। पुस्तक हर प्रकार से सुन्दर है, केवल एक बात खटकती है और वह यह कि सिर्फ ११० पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य १५) बहुत अधिक रखा गया है।

उदयनारायणसिंह

नोट:—किताब का मूल्य ७ रुपये ८ आने कर दिया गया है।
लेखक

स्वतंत्र भारत, लखनऊ

(२४ नवम्बर, १९५८)

पर्व प्रदर्शनिका—रचयिता श्री प्यारेलाल गुप्त, भूमिका लेखक डा० सीताराम, मुख्य विक्रेता रामनिवास कौशल, द्वारा कौशला जनरल ट्रेडिंग कं०, निर्माणकर्ता फाउण्टेनपेन तथा इंक, अमीनाबाद पार्क, लखनऊ। पृष्ठ संख्या ११० मूल्य १५)—छात्रों के हितार्थ सजिल्द ७।।) अजिल्द ६)।

दर्शिका से प्रदर्शिका और प्रदर्शनिका तक पहुँचने के लिए जो अध्यवसाय चाहिए वह पुस्तक में है। सत्यनारायण की कथा, नवरात्र, दुर्गापूजन, बलि-प्रदान, जन्माष्टमी, अनन्त चौदस, श्रावणी, दीवाली, यम द्वितीया, होली, शिवरात्रि, चन्द्रग्रहण, विश्वकर्मा पूजा और अश्वत्थादि पूजन के व्याज से लेखक ने अपना आध्यात्मिक आदर्श समझाने का प्रयास किया है। इतना स्पष्ट है कि जिस प्रकार हिन्दू का लेखक को ग्राह्य अर्थ सबको ग्राह्य नहीं है उसी प्रकार प्रदर्शनिका के अधिकांश प्रदर्शन विशेष रूप से "दर्शन" के अभ्यस्त पाठकों को ही प्रिय लगेगा। फिर भी अपने ढंग का यह अनूठा प्रयास सराहनीय तो है ही।

व्रतों त्योहारों तथा पर्वों के विश्लेषण में लेखक अपनी समझ से इतना अभिभूत है कि विश्लेषण अथवा गहराई में पैठकर अज्ञात तत्व खोज लाने की प्रवृत्ति गौण एवं निराश्रित हो गयी है। लेखक ने सभी पर्वों को प्रतीक रूप में ही देखा है। उन प्रतीकों का स्पष्टीकरण कहीं शब्दों के ध्वनि विच्छेद द्वारा और कहीं रेखाचित्रों द्वारा सुन्दर बन पड़ा है। सभी निबन्ध रोचक हैं और इन्हें पढ़ने के बाद पाठकों को भारत की सांस्कृतिक धरोहर के विषय में पर्याप्त ज्ञान हो जायगा। इस रूप में जो वर्ग इससे सबसे अधिक लाभान्वित हो सकता है उसके लिए घटा हुआ मूल्य भी अधिक है। यदि छोटे टाइप में, सामान्य कागज पर भी कोई सस्ता संस्करण निकल सके तो अधिक उपयोगी होगा।

—अखिलेश मिश्र

HOME MINISTER
INDIA
नई दिल्ली,
नवम्बर १४, १६५८

सत्यमेव जयते

प्रिय प्यारे लाल गुप्ता,

आपका दिनांक नवम्बर ७ का पत्र और 'पर्व प्रदर्शनिका' की प्रति प्राप्त हुई, धन्यवाद। मुझे आशा है कि इस विषय में रुचि रखने वाले पाठक आपकी पुस्तिका से लाभ उठाएँगे।

सस्नेह

गोविन्द वल्लभ पन्त

श्री प्यारेलाल गुप्ता
गुप्ता बिल्डिंग, नयागाँव
लखनऊ

॥ शिवोऽहम् ॥

प्रिय आत्मस्वरूप गुप्ता जी,

अखण्ड हरिस्मरण

आपके इस 'पर्व-प्रदर्शनिका' पुस्तक में भारतीय प्राचीनतम भक्ति निष्ठा एवं संस्कृति से ओत-प्रोत लेख पढ़ कर आत्मा अपूर्व आनन्द के सागर में गोते लगाने लगा और सहसा भगवती वीणा पाणि की सुप्रेरणा द्वारा लेख की प्रशंसा के सुमधुर संगीतमय शब्द मुखरित हो उठे।

आपका अभिन्नात्मा

दिनांक १७-११-'५८ **स्वामी विद्यानन्द (परमहंस)**

Dear Sir,

We have received your book 'Parva-Pradarshnika' It is a welcome addition to the Hindi Section of our Library.

The mother sends you Blessings.

Yours faithfully,
Sd.
Secretary,
Sri Aurobindo Ashram
Pandichery.

26-11-58

Dr. K. C. Sarkar
M. A. Ph. D.
Proffessor of Commerce
and Dean, Faculty of
Commerce
Lucknow University.

Phone { Off. : 5080
Res. : 2556

57, Badshah Bagh,
LUCKNOW.
1. 12. 58

I have read with deep interest 'PARVA-PRADARSHANIKA' written by Sri Pyare Lal Gupta. The authar has given a Scientific interpretation of the Hindu festivals observed in India. Today these festivals are observed in the country as a matter of tradition and their real significance has been last. The author has very successfully brought out the real significance of the Hindu festivals in his book. This is a great contribution and the author deserves congratulations for bringing out this most learned and interesting treatise.

Sd. K. C. Sarkar.

I must highly congratulate the author of 'PARVA-PRADARSHANIKA' for the unique manner in which he has attempted to bring to light the deep significance of the most common forms of religious and social festivals traditionally in practice amongst Hindus. I wish that any one who participates in such functions should read this book with interest and he will earn a piece of mind which comes from deeply religious insight which should be the privilage of a common man. Non-Hindus will also find something which they would miss otherwise.

Sd. M. M. Bhattacharya,
Principal,
Hewett Engineering School,
Lucknow.

Lucknow.
30. 11. 58.

विनोदचन्द्र शर्मा

आई० ए० एस०

लखनऊ

८—१२—१९५८

श्री प्यारे लाल गुप्ता रचित "पर्व-प्रदर्शनिका" पुस्तक मैंने बड़े चाव से देखी। हिन्दू मात्र त्योहारों में दिलचस्पी लेते हैं और अधिकांश इनमें अत्यन्त श्रद्धा भी रखते हैं। इन पर्वों का ऐतिहासिक विवेचन पुराण इत्यादि में मिलता है पर श्री गुप्ता ने इस पुस्तिका में अपने ढंग की अनूठी विवेचना की है और एक नये दृष्टिकोण को समाज के हितार्थ प्रस्तुत किया है। यह प्रयास प्रशंसनीय है और मुझे विश्वास है कि समाज में ऐसे मौलिक विवेचक की पुस्तक का उचित सम्मान होगा।

विनोदचन्द्र शर्मा

एडीशनल सेक्रेटरी, राजस्व विभाग

व राज्य संपादक डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स

उत्तर प्रदेश

(भूतपूर्व सचिव, शिक्षा विभाग)

——०——

१७ जापलिंग रोड

लखनऊ

२८—११—५८

श्रद्धेय गुप्ता जी,

आपका पत्र मिला। मैंने आपकी पुस्तक 'पर्व-प्रदर्शनिका' पर सम्मति भेजने का साहस इस कारण नहीं किया कि मैंने अपने को उसके गूढ़ विषय समझने में सर्वथा अयोग्य पाया। अब केवल इतना कहना चाहता हूँ कि लेखक ने इस पुस्तक में हिन्दू त्योहारों पर मौलिक ढंग से प्रकाश डाला है जो नवीन होते हुये भी प्राचीनतम ग्रन्थों पर आश्रित है। विभिन्न विचारधाराओं एवम् शास्त्रों के सम्बन्ध में एक अद्भुत सामग्री उत्पन्न की गई है। कई स्थानों पर रहस्य के हास्य रस की पुट का आभास होता है जिससे पाठक की रुचि आद्योपान्त पढ़ने की हो जाती है।

भवदीय

देशदीपक

डिप्टी लीगल रिमेमब्रान्सर

उत्तर प्रदेश

तार—'गीता' श्री हरिः फोन—८३

कल्याण

सम्पादकीय विभाग

प्रो० गीता प्रेस (गोरखपुर)

दिनांक २८—११—५८

आदरणीय महानुभाव,

सादर हरिस्मरण। आपकी पुस्तक मिली। पत्र भी मिला। आपने सभी धार्मिक विषयों पर नये ढंग से विचार किया है। धन्यवाद। किसी प्रकार भी जीवन भगवान् में लगे, यही अभीष्ट है।

शेष भगवत्कृपा।

भवदीय

जानकीनाथ

कृत संपादक

सरस्वती मैगजीन, इलाहाबाद

अक्टूबर १९५८

पर्व प्रदर्शनिका—प्यारेलाल गुप्त, पु० लेखक, गुप्ता बिल्डिंग नया गांव, लखनऊ। मूल्य पन्द्रह रुपये।

इस पुस्तक में हिन्दुओं के मुख्य पर्वों और पूजा पर लेखक के मौलिक विचारों का संकलन है। पर्वों के महत्व को बतलाते हुये लेखक ने उनके सम्बन्ध में जो व्याख्या दी है वह मौलिक है और उसमें इस बात का प्रयत्न किया गया है कि आधुनिक शिक्षित पुरुष को उसकी भाषा में, इन पर्वों का आध्यात्मिक और वैज्ञानिक महत्व समझाए। इनमें बहुत-सी बातों से पाठक सहमत न होंगे, किन्तु लेखक का दृष्टिकोण समझने में यह पुस्तक सहायक होगी। पुस्तक का मूल्य बहुत अधिक है।

नोट :—किताब का मूल्य ७॥) कर दिया गया है।

—लेखक

// Acharya Jugal Kishore
Ex-Vice Chancellor
LUCKNOW UNIVERSITY, LUCKNOW.

लखनऊ १५—१२—५८

Shri Piare Lal Gupta has in his book "PARV-PARDARSHANIKA" brought out in rather an unique manner the significance of the PARVS, which Hindus throughout celebrate. These PARVS according to the author represent the esoteric life of the people and are of universal character. The readers, I am confident, will be benefitted by the novel interpretation the author has given to the inner significance of our festivals and their intimate connection with the aspirations of man to know the unknowable and to dedicate himself to the attainment of Sachchidanand.

Sd. Jugal Kishore.

श्री प्यारेलाल गुप्त लिखित **पर्व-प्रदर्शनिका** देखने का सौभाग्य हुआ। मुझे प्रसन्नता है—श्री गुप्त जी ने हमारे सांस्कृतिक पर्वों पर मौलिक विचार प्रस्तुत करके इन पर्वों का महत्व बढ़ा दिया है। आज के वैज्ञानिक युग में इन परंपराओं पर नवीन दृष्टिकोण से विचार करने की आवश्यकता है। श्री गुप्त जी का इस विषय में यह प्रस्तुत प्रयास है। मेरा विश्वास है सर्वसाधारण को इससे लाभ होगा और नवीन दृष्टि मिलेगी।

गोवर्धननाथ शुक्ल
एम० ए० पी० एच० डी०
रीडर संस्कृत हिन्दी
विभाग
अलीगढ़ विश्वविद्यालय

शुक्ल सदन
१४—१२—५८

Acharya Jugal Kishore

Ex-Vice Chancellor

LUCKNOW UNIVERSITY, LUCKNOW.

लखनऊ १५—१२—५८

Shri Piare Lal Gupta has in his book "PARV-PARDARSHANIKA" brought out in rather an unique manner the significance of the PARVS, which Hindus throughout celebrate. These PARVS according to the author represent the esoteric life of the people and are of universal character. The readers, I am confident, will be benefitted by the novel interpretation the author has given to the inner significance of our festivals and their intimate connection with the aspirations of man to know the unknowable and to dedicate himself to the attainment of Sachchidanand.

Sd. Jugal Kishore.

श्री प्यारेलाल गुप्त लिखित **पर्व-प्रदर्शनिका** देखने का सौभाग्य हुआ। मुझे प्रसन्नता है—श्री गुप्त जी ने हमारे सांस्कृतिक पर्वों पर मौलिक विचार प्रस्तुत करके इन पर्वों का महत्व बढ़ा दिया है। आज के वैज्ञानिक युग में इन परंपराओं पर नवीन दृष्टिकोण से विचार करने की आवश्यकता है। श्री गुप्त जी का इस विषय में यह प्रस्तुत प्रयास है। मेरा विश्वास है सर्वसाधारण को इससे लाभ होगा और नवीन दृष्टि मिलेगी।

गोवर्धननाथ शुक्ल

एम० ए० पी० एच० डी०

रीडर संस्कृत हिन्दी

विभाग

अलीगढ़ विश्वविद्यालय

शुक्ल सदन

१४—१२—५८

Indu Mati Tewari
M.A. (Sanskrit & Hindi)

Ex-Lecturer
D. P. Girls' College, Allahabad.

C/o Shree K.D. Tewari
Registrar
Lucknow University

73, Badshabagh,
Lucknow.
16-12-1958.

"पर्व-प्रदर्शनिका" को मनोनीत किया। बड़ी ही प्रसन्नता के साथ पूर्ण अध्ययन किया। मुझे समालोचिका होने का गौरव नहीं प्राप्त है, इसलिए विशेष कुछ न कहकर इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि लेखक ने एक नवीन रूप से इसमें सभी हिन्दू पर्वों का विश्लेषण किया है, साथ ही शास्त्रोक्ति विधिविधानों का भी उल्लेख गुप्ताजी के गम्भीर मनन का परिचय देती हैं। भाषा प्रांजल तथा विषय के अनुकूल है। आशा है यह पुस्तक घर-घर की शोभा वृद्धि करेगी और हमें हमारे पर्वों का सत्य-रूप दिखाकर, सत्य-मार्ग पर अग्रसर कर सकेगी।

अस्तु !

इन्दुमती तिवारी
एम० ए० (संस्कृत, हिन्दी)

दिनांक १३-१२-१९५८

'पर्व प्रदर्शनिका' के लेखक का परिश्रम सराहनीय है। पाठकों को लाभ उठाना चाहिए।

नारदानन्द सरस्वती